आज अवकाश

दैनिक निर्दलीय कार्यालय में होली के पर्व पर ४ मार्च को अवकाश रहेगा। अतएव, निर्दलीय का आगामी अंक ६ मार्च २०२६ को पाठकों के हाथों में होगा।

– प्रबंध संपादक,
दैनिक निर्दलीय

निर्दलीय प्रकाशन

फ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधिः पहले उक्त लिंक पर जाएं फिर क्लिक करें e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें। साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें

निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

वर्ष-५३/१५ अंक- २१४ भोपाल ४ मार्च, डाक ५ मार्च २०२६ भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित पृष्ठ -८ मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

वे अहिर्निश छल-कपट करते रहे। और हम उन्हें उपदेश ही देते रहे।।

त्वरित विचार
अग्र लेख-२६

कैलाश आदमी

प्रकृति ने सबको सब कुछ दिया है। कब सूर्योदय होगा, कब सूर्यास्त होगा, कब चंद्रोदय होगा और कब चंद्रास्त होगा, कब गर्मी पड़ेगी, कब ठंड पड़ेगी और कब बरसात होगी यह ना केवल मनुष्य बल्कि समूची सृष्टि के लिए प्रकृति ने दे रखा है।

जहां तक मानव प्रकृति का सवाल है मानव जन्मता निष्कपट, निश्छल और निस्वार्थ भावना से ओतप्रोत रहता है। मानव सहित प्रकृतिजन्य समस्त रचनाएं इसी भावभंगिमा से परिपूर्ण होती हैं। जहां तक मनुष्य की प्रकृति का प्रश्न है उसमें निर्मल भावनाएं अंकुरित होती हैं किंतु ये भावनाएं उम्र के साथ कलुषित होती जाती हैं तो उसका दोष प्रकृति को नहीं दिया जा सकता बल्कि इसके लिए मनुष्य ही दोषी है।

कोई व्यक्ति कितना निष्कपट, निश्छल और निस्वार्थ भावनाओं से ओतप्रोत है यह उसकी वाणी, कर्म और व्यवहार से प्रकट होता है तथापि उसके नापने का कोई सार्वभौम, सार्वकालिक और सार्वजनिक पैमाना नहीं है। वैसे निष्कपट, निश्छल और निस्वार्थ दिखने वाले व्यक्ति को जब कोई दूसरा व्यक्ति देखता है तो उसका नजरिया भिन्न होता है। इसका कारण उसकी अपनी दृष्टि, बोधगम्यता और वैचारिकता होती है। सामने वाला व्यक्ति यदि छली-कपटी है तो उसका नजरिया सांसारिक वातावरण को देखते हुए भिन्न ही होगा। वैसे छलछिद्रयुक्त व्यक्ति देखने में निष्कपट, निश्छल और निस्वार्थ दिखाई दे सकता है किंतु वे अपने दोष ज्यादा दिनों तक छिपाकर नहीं रख पाते। एक ना एक दिन उनकी कलई खुल ही जाती है। इसके विपरीत निष्कपट, निश्छल और निस्वार्थ व्यक्ति का अपना स्वभाव अपरिवर्तित ही रहता है।

छल-कपट से मुक्त होने के लिए संतों, महात्माओं, ऋषियों, मुनियों, मुल्ला-मौलवियों और पादरियों ने समय-समय पर रास्ते सुझाए हैं जिनमें एक यह कि व्यक्ति छलछिद्र या कपट मुक्त होने के लिए ध्यान-साधना, नमाज और प्रार्थना करे तो वह दोषों से मुक्त हो सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि संबंधित व्यक्ति निर्मल हृदय से सदव्यवहार, सदवाणी और सदकर्म करने का फैसला ले ताकि वह कदाचार से मुक्त होकर शेष जीवन शांति से जी सके।

छली, कपटी व्यक्ति के लिए यह भी आवश्यक है कि वह ध्यान, साधना, पूजा-प्रार्थना, नमाज आदि करने के साथ ही उन लोगों से क्षमा, प्रार्थना या माफी मांगे जिनके साथ वह पहले छल, कपट या कदाचार कर चुका है। यही नहीं वह प्रतिद्वंद्वी, विरोधी या शत्रु सहित सभी जनों से एकरूपता का अनुभव करने के लिए निरंतर संकल्पवान और अभ्यासरत रहे। व्यक्ति यदि अपनी अंतरआत्मा की आवाज सुनकर आत्मचिंतन करें और फिर तदनुरूप अपने जीवन को नए सिरे से ढालने लगे तो भविष्य में वह छल-कपटपूर्ण व्यवहार और धोखाधड़ी करने की बजाए धर्म, न्याय व इंसानियत के सही मार्ग पर चलने लगेगा, इसमें किंचित संदेह नहीं।

जो व्यक्ति निष्कपट और निष्कलंक व निर्मल जीवन जीना चाहता है उसके लिए यह भी आवश्यक है कि वह जाग्रत हो,प्रयत्नशील हो और संकल्पित हो, इसके साथ ही उसके सामने लक्ष्य स्पष्ट हो कि उसे अपनी शक्ति, क्षमता, मूल्य एवं कर्तव्य के प्रति सदा जाग्रत रहना है।

स्पष्ट है कि अपनी शक्ति व क्षमता के साथ संकल्पित व्यक्ति को स्वयं अपने ही मूल्य और कर्तव्य व निष्ठा को पहचानना है। उसे सोचना होगा कि उसका स्वतंत्र अस्तित्व है और उसे नया जीवन जीने के लिए अपने बारे में निर्णय लेने की पूर्ण स्वतंत्रता है तथा वह इसके लिए सक्षम भी है। निष्कपटता के लिए व्यक्ति की शारीरिक क्षमता की तुलना में मानसिक क्षमता ज्यादा महत्वपूर्ण है। यदि उसने निष्पक्ष रहने का मन बना लिया तो वह अपने लक्ष्य के अनुसार संकल्प पर दृढता से आगे बढ़ सकता है। इससे उसका अपना सर्वतोमुखी विकास संभव है। मानसिक सक्षमता के साथ व्यक्ति की वैचारिक स्थिति का भी अपना महत्व है।

निष्कपट व्यक्ति कौन? वह जिसकी वाणी व व्यवहार और आचरण में कोई छल, कपट ना हो। इसके लिए उसकी शुद्ध मनोवृत्ति और सकारात्मक भावना आवश्यक है। मैंने एक पुस्तक 'आराध्य सूत्र' पढ़ी जिसे जैन संतद्वय निर्दोष सागर और निर्लोभ सागर ने लिखा है। पुस्तक में उन्होंने ८४ विषयों पर विचार सूक्तियां दी हैं जिनमें प्रथम सूक्ति या सूत्र आत्म साधना है। संत निर्दोष सागर के अनुसार वर्ष २०१९ में ग्रीष्मावकाश के दौरान उन्होंने एक पुस्तक 'विश्व सूक्ति कोष' पढ़ी तो यह विचार मन में आया कि अच्छी-अच्छी सूक्तियां जीवन बदल सकती हैं। संत निर्दोभ सागर ने व्यक्त किया कि ये विषय जन-जन को उपलब्ध हो जाएं तो उनके जीवन में बहुत परिवर्तन आ सकता है। उन्होंने एक सूक्ति-सबसे सुंदर एक जिसका नाम विवेक- को उद्धृत करते हुए लिखा- नकारात्मक दृष्टि व्यक्ति को हताश करती है। जीने का आनंद संघर्ष में नहीं समर्पण में है और समर्पण से संतोष मिलता है।

मेरा अपना निजी मत यह है कि संतोषी बनने के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति निष्कपट व छलछिद्र रहित हो और उसके मन में आने वाले विचार सकारात्मक हों। इस हेतु आत्म निरीक्षण आवश्यक है। आत्म निरीक्षण करने पर व्यक्ति को अपने दोष दिखाई देंगे और वह उन दोषों को मानकर उनके निराकरण के लिए प्रयत्नशील होगा तो निश्चय ही वह अपना नया जीवन शुरू कर सकता है।

सारांश यह कि जब व्यक्ति यह जान जाएगा कि उसमें अर्थात खुद में ही बुराइयां है और यदि वह शुद्ध व निर्मल मनोभाव से उनके निरसन में लग जाएगा तो वह छल-कपट भावों से मुक्ति पा सकता है।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

वे अहिर्निश छल-कपट करते रहे।
और हम उन्हें उपदेश ही देते रहे।।

युद्ध की विभीषिका से ग्रस्त पूरी दुनिया

शीला श्रीवास्तव

पृथ्वी का हाल देखकर हमारे मन में यह विचार आता है कि हमारी धरोहरें जो हमारे पूर्वजों ने हमे सौंपी थी हमने उनका अस्तित्व कहां तक संभाला है?

देश की आजादी के लिए कितने शहीदों का खून बहा जनता ने बंटवारे का दुख झेला किन्तु अभी भी देश अशांति के वातावरण से गुजर रहा है। अमेरिका-इजराइल, पड़ोसी देशों ने आतंकवाद का जो खेल रचा है उसका परिणाम केवल विध्वंस की विभीषिका को बढ़ावा दे रहा है जो किसी के लिए हितकारी नहीं होगा। जान माल का नुकसान सभी को भुगतना पड़ेगा।

विश्व का हाल देख कर हर मानव व्यथित है। हर जगह मचा हुआ है हाहाकार। अपनी सत्ता के लिए निर्दोषों खून बह रहा है। बच्चे मां-बाप से बिछड़ रहे हैं घर द्वार टूट रहे हैं ! धरती मां की छाती फटी जा रही है। हरी भरी वसुंधरा कंक्रीट का जंगल बनती जा रही है।

अपने को शक्तिशाली दिखाने के लिए अमेरिका अपना वर्चस्व दिखा रहा है! सच्चाई, भाई-चारा अब सपना दिखने लगा है। वादे झूठे हो रहे हैं! दोस्ती का मतलब ही झूठा हो गया। हमारी धरती माँ रो रही है। हमारे पूर्वजों ने जो हरी भरी वसुंधरा दी थी वह अब दिखाई नहीं पड़ती! पूर्वजों की बनाई धरोहर को नुकसान पहुंचाया जा रहा है।आधुनिकता का नाम देकर कहा जाता है सबका विकास हो रहा है। यह कैसा विकास है हमारी वसुन्धरा जार जार रो रही है! पूरे विश्व का पर्यावरण बिगड़ रहा है प्राकृतिक आपदाओं का शिकार हो रहा है। हम स्वयं अपनी जड़ों को विनाश की ओर ले जा रहे हैं। आज हर देश राष्ट्र का कर्तव्य है कि वह अपनी वसुंधरा को नष्ट होने से बचाए! विकास की अंधी दौड़ में सत्ता कि लोलुपता में विनास की ओर बढ़ते कदम को रोक ले। अपनी संस्कृति और सभ्यता को उन्नति के शिखर पर पहुंचाने में अग्रसर हो।

राष्ट्रों को अपना विकास करने के लिए अपनी रक्षा के लिए सादा प्रयत्नशील रहना चाहिये परन्तु यह सोचना नहीं चाहिए हम

विश्व को मिटाने की ताकत रखते हैं। आज विश्व का हाल देखकर हमारे पूर्वजों को हम लोग कौन सी खुशी दे पा रहे हैं। हर समय युद्ध के भय का वातावरण सामने नजर आता है। अमेरिका-इजराइल द्वारा किए गए नरसंहार का समाचार सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं उनके परिवारों की दशा देखकर मन द्रवित हो जाता है।

धरती माता को बांटने का यह हर्ष होगा कि चारों तरफ एक देश दूसरे देश को मिटाने के लिए अपनी ताकत दिखता है। पड़ोसी भाई चारा किसे कहते हैं यह परिभाषा देश भूल गए हैं। राष्ट्रों में युद्ध की विभीषिका जनता को भूखे प्यासे रहने को मजबूर कर देती है। देखा जाए तो युद्ध किसी भी समस्या का हल नहीं है सबको अपने-अपने राष्ट्र को उन्नत बनाने की ओर अग्रसर रहना चाहिए ना ही किसी की तरक्की देखकर उसको मिटाने का सोचना चाहिए।

\- भोपाल

श्याम मठपाल

बाल कविता- होली

आओ खेलें सारे होली।
एक बना लें अपनी टोली।।

रंगों की मारो पिचकारी।
आएगी अब सबकी बारी।।

गालों पर सब रंग लगाओ।
बनी मिठाई मिलकर खाओ।।

सबको अपने गले लगाओ।
हँसों खूब तुम और हँसाओ।।

पक्के रंगों से हो दूरी।
नहीं मिटे फिर हो मज़बूरी।।

नहीं डालते ठंडा पानी।
बढे रोग सुन राजा रानी।।

घर आकर फिर सभी नहाओ।
होली कैसी हमें बताओ।।

–उदयपुर

इंडोनेशिया में चली कलम रूपी पिचकारी

इंदु नांदल जी 30 वर्ष से अधिक समय से इंडोनेशिया में रह रही हैं और वे 'वंदे मातरम परिवार ' की संस्थापक हैं । इंदु जी पेशे से अध्यापिका हैं और देश पर लिखना शौक नहीं बल्कि अपनी ज़िम्मेदारी समझती हैं इसलिए उन्होंने भारतीय धरोहर पर 5 विश्व रिकॉर्ड बनाए हैं । होली के पर्व पर उन्होंने इंडोनेशिया में महिला काव्य मंच की काव्य गोष्ठी का आयोजन किया ।आ नरेश नाज़ जी महिला काव्य मंच के संस्थापक हैं और इंदु नांदल महिला काव्य मंच की इंडोनेशिया की अध्यक्ष हैं ।

काव्य गोष्ठी का आरम्भ इंदु जी ने सरस्वती वंदना गाकर किया । उन्होंने सरस्वती वंदना जापानी काव्य विधा ' हाइकु 'में लिखी थी ।होली के विषय पर दोहे , ग़ज़ल,गीत ,हाइकु जैसी विधाओं में विश्व भर से जुड़े कवियों- कवयित्रियों ने मन को छू जाने वाले रंग बिखेरे। आदरणीय नरेश नाज़ जी के साथ सीमा शर्मा जी व निशा गुप्ता जी भारत से जुड़े । ऑस्ट्रेलियाई से भावना कुँवर जी व प्रगीत कुँवर जी , दुबई से अमृत बिसारिया जी , ताइवान से भावना श्रीवास्तव जी ,इंडोनेशिया से इंदु नांदल जी ,नीता सरोजनी जी,जोगिंदर कौर जी,प्राची गर्ग व गीता सेठ जी जुड़े । इंदु जी ने कहा गुलाल तो धोने से उतर जाता है पर जो रंग कलम रूपी पिचकारी से निकलते हैं वो शरीर को नहीं असंख्य आत्माओं को पावन रंगों में आजीवन के लिए रंग देते हैं जो पीढ़ियों तक रंग नहीं छोड़ते , ये रंग हैं सत्य,अच्छाई,भक्ति व प्रेम के।

आओ सुनाऊं सखी री

पहली होली–डॉ मीना कुमारी परिहार

आओ सुनाऊं सखी री, मेरी होली कैसी रही..?
पहली होली पड़ गई सासुरे में, दैया रे
मोरे नटखट देवरा करे ठिठोली
कसके पकड़े नरम कलाई, दैया रे
मेरी पहली होली पड़ गई ससुरे में
देखी -देखी नन्द मोरी फरमाए
काहे को धूमा चौकड़ी मचाए दैया रे
भर -भर पिचकारी भिंगाए चोली रे
कैसे कहूं, अब कह लो ना जाए रे दैया रे
मोर सजनवा अंक भर के खेले होली रे
मन के बतिया भीतरे रह जाए रे दैया रे
बड़ा मजा करे प्यार के रंग में दैया रे
अंगनवा में हमका खूब नचावे दैया रे
कोई बलजोरी करे पा के अकेले
कोई हमका खींचे कोई धकेले दैया रे
बारी-बारी रंग उमंग संग मिलके लगाए दैया रे
गालियों- चौराहों में देखो बाजे ढोल और मृदंग
लाल -पीले -हरे रंगों के संग खूब खेले होलीरे
भांग की मस्ती हर घर -घर में
हर घर मंहके के खुशियों के संग
दैया रे पहली होली पड़ गई सासुरे में
मैं मन- ही -मन मुस्काई
मैं वारी -वारी जाऊं, जो पहली होली
सासुरे में मनाई.... दैया रे

-पटना

संपादक: प्रिंस अभिशेख अज्ञानी (९८२६४२२८२०)

प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

निष्पक्षता, निर्वैरता व निडरता का दैनिक प्रवक्तां

निर्दलीय

www.nirdaliya.com ई-मेल: kailashaadami2010@gmail.com, nirdaliyadaily@gmail.com

वर्ष–५३/१५ | भोपाल ४ मार्च, डाक ५ मार्च २०२६ | मूल्य -1+1/-संप्रेषण /स्वैच्छिक

संस्थापक संपादक
कैलाश श्रीवास्तव 'आदमी'
(९४२४४४३४०१)

संपादक
प्रिय अभिषेक (प्रिंस अभिशेख अज्ञानी)
(९८२६४२२८२०)

सलाहकार/संरक्षक- सुरेंद्र नाथ दुबे (गुरुग्राम)/सेठ रामनिवास गुप्ता, श्रीमती कविता मल्होत्रा (नई दिल्ली)

मुख्य संरक्षक
पवन कुमार जैन (बदनावर)

प्रबंध संपादक
अशोक निर्मल

साहित्य संपादक
सरिता गर्ग 'सरि' (जयपुर)

स्वामी निर्दलीय प्रकाशन एवं स्वत्वाधिकारी कैलाश श्रीवास्तव के लिए संपादक प्रिय अभिषेक (प्रिंस अभिशेख अज्ञानी)' (दृष्टि जन संगठन) द्वारा निर्दलीय प्रेस भोपाल द्वारा जेयन ऑफसेट के सहकार्य से मुद्रित तथा एफ-116/7 शिवाजी नगर,भोपाल -462016 से प्रकाशित

देश के विभिन्न अंचलों में होली के विभिन्न रूप

द्रौपदी साहू

होली पर्व को देश के अलग-अलग अंचलों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है और उनकी होली मनाने की अलग परंपरा भी प्रचलित है।

फगुआ, फाग और लट्ठमार होली :- बिहार और उत्तर प्रदेश में होली को फगुआ, फाग और लट्ठमार होली कहते हैं। खासकर मथुरा, नंदगांव, गोकुल, वृंदावन और बरसाना में इसकी धूम होती है। बरसाने की लट्ठमार होली फाल्गुन मास की शुक्ल पक्ष की नवमी को मनाई जाती है। इस दिन नंदगाँव के ग्वाल-बाल होली खेलने के लिए राधा रानी के गाँव बरसाने जाते हैं और विभिन्न मंदिरों में पूजा अर्चना के पश्चात नंदगांव के पुरुष होली खेलने बरसाना गाँव में आते हैं और बरसाना गाँव के लोग नंदगाँव में जाते हैं। इन पुरूषों को होरियारे कहा जाता है। बरसाना की लट्ठमार होली के बाद अगले दिन यानी फाल्गुन शुक्ला दशमी के दिन बरसाना के हुरियार नंदगाँव की हुरियारिनों से होली खेलने उनके यहाँ पहुँचते हैं। तब नंदभवन में होली की खूब धूम मचती है।

धुलेंडी/धुरड्डी, धुरखेल या धूलिवंदन : मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में होली वाले दिन होलिका दहन होता है, दूसरे दिन धुलैंडी मनाते हैं और पाँचवें दिन रंग पंचमी मनाते हैं। यहाँ के आदिवासियों में होली की खासी धूम होती है। प्रमुखतः धुलेंडी को धुरड्डी, धुरखेल या धूलिवंदन के नाम से जानते हैं, लोग एक दूसरे पर रंग-गुलाल लगाते हैं, ढोल व नगाड़े बजा कर होली के गीत गाते हैं और घर-घर जा कर लोगों को रंग लगाते हैं। हरियाणा में भी होली को दुलंडी या धुलैंडी के नाम से जानते हैं।

फाल्गुन पूर्णिमा : फाल्गुन माह की पूर्णिमा को मनाए जाने के कारण महाराष्ट्र में होली को 'फाल्गुन पूर्णिमा' और 'रंग पंचमी' के नाम से जानते हैं।

शिमगो या शिमगोत्सव : गोवा के निवासी होली को कोंकणी में शिमगो या शिमगोत्सव कहते हैं। वे इस अवसर पर वसंत का स्वागत करने के लिए रंग खेलते हैं। इसके बाद भोजन में मुर्गी या मटन की करी खाते हैं जिसे शगोटी कहा जाता है। मिठाई भी खाई जाती है। गोवा में शिमगोत्सव की सबसे अनूठी बात पंजिम का वह विशालकाय जुलूस है जो होली के दिन निकाला जाता है। यह जुलूस अपने गंतव्य पर पहुँचकर सांस्कृतिक कार्यक्रम में परिवर्तित हो जाता है। इस कार्यक्रम में नाटक और संगीत होते हैं जिनका विषय साहित्यिक, सांस्कृतिक और पौराणिक होता है। हर जाति और धर्म के लोग इस कार्यक्रम में उत्साह के साथ भाग लेते हैं।

गोविन्दा होली: गुजरात में गोविंदा होली की खासी धूम होती है। यह यहाँ मनाया जाने वाला पारंपरिक और उत्साहपूर्ण उत्सव है। होली के अगले दिन, मस्त युवकों की टोलियाँ सड़कों पर नाचते-गाते हुए निकलती हैं और गलियों में ऊँचाई पर दही की मटकियाँ फोड़कर यह त्योहार मनाती हैं। यह भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का प्रतीक है, जहाँ वे 'गोविंदा' (माखन चोर) के रूप में मटकी फोड़ते हैं।

होला मोहल्ला : पंजाब में होली को 'होला मोहल्ला' कहते हैं। सिक्खों के पवित्र धर्मस्थान श्री आनंदपुर साहिब में होली के अगले दिन से लगने वाले मेले को होला मोहल्ला कहते हैं। सिक्खों के लिये होला मोहल्ला बहुत ही महत्वपूर्ण है। यहाँ पर होली पौरुष के प्रतीक पर्व के रूप में मनाई जाती है। इसीलिए दशम गुरु गोविंद सिंह जी ने होली के लिए पुल्लिंग शब्द होला मोहल्ला का प्रयोग किया। गुरु जी इसके माध्यम से समाज के दुर्बल और शोषित वर्ग की प्रगति चाहते थे। होला मोहल्ला का उत्सव आनंदपुर साहिब में छः दिन तक चलता है। इस अवसर पर घोड़ों पर सवार निहंग(निहंग से अभिप्राय-ऐसे सिक्ख जो दस गुरुओं के आदेशों के पूर्ण रूप से पालन के लिए हर समय तत्पर रहते हैं और प्रेरणाओं से ओतप्रोत होते हैं। दस गुरुओं के काल में ये सिख गुरु साहिबानों के प्रबल प्रहरी होते थे) हाथ में निशान साहब(निशान साहब सिक्खों का पवित्र त्रिकोणीय ध्वज है। यह परचम कपास या रेशम के कपड़े का बना होता है, इसके सिरे पर एक रेशम की लटकन होती है। इसे हर गुरूद्वारे के बाहर, एक ऊँचे ध्वजडंड पर फहराया जाता है।) उठाए तलवारों के करतब दिखा कर साहस, पौरुष और उल्लास का प्रदर्शन करते हैं। पंज पियारे नगर कीर्तन का नेतृत्व करते हुए रंगों की बरसात करते हैं और जुलूस में निहंगों के अखाड़े नंगी तलवारों के करतब दिखाते हुए 'जो बोले सो निहाल' के नारे बुलंद करते हैं। इस दिन आनन्दपुर साहिब की सजावट की जाती है और विशाल लंगर का आयोजन किया जाता है।

डोल जात्रा : पश्चिम बंगाल में होली को 'डोल जात्रा' के रूप में मनाया जाता है। यहाँ लोग इस दिन कृष्ण और राधा की मूर्ति को एक पालकी पर रखकर मनाते हैं और वे उन्हें चारों ओर ले जाते हैं और अबीर-गुलाल से खेलते हैं। इस दिन युवाओं द्वारा बड़ों के पैरों को रंग से छूकर आशीर्वाद लेने की प्रथा है।

'डोल पूर्णिमा': उड़ीसा में होली मनाने की परंपरा पश्चिम बंगाल के समान ही है, कुछ क्षेत्रों में होली को यहाँ 'डोल पूर्णिमा' के नाम से जाना जाता है, लेकिन वे कृष्ण और राधा की मूर्तियों को झूले पर रखने के बजाय भगवान जगन्नाथ की मूर्ति को स्थापित करते हैं। ऐसा पुरी में जगन्नाथ के प्रसिद्ध मंदिर के कारण है।

कामाविलास: तमिलनाडु में लोग होली को कामदेव के बलिदान के रूप में याद करते हैं। इसीलिए यहाँ पर होली को कमान पंडिगई, कामाविलास और कामा-दाहानाम कहते हैं।

कामना हब्बा: कर्नाटक में होली के पर्व को कामना हब्बा के रूप में मनाते हैं। यहाँ दो दिन होली का त्यौहार मनाया जाता है। इस मौके पर स्थानीय लोग अपनी अपनी गलियों में आकर या किसी एक स्थान पर मिलकर होली खेलते हैं। वहीं बाहर से आने वाले पर्यटक भी होली के उत्सव में शामिल होते हैं। इस मौके पर लोग एक दूसरे को गले लगाते हैं, गुलाल से रंगारंग कर ढोल नगाड़ों की थाप पर जुलूस निकालते हुए नाचते गाते हैं।

काम पूर्णिमा/जजिरी: आंध्रप्रदेश में होली का उत्सव उत्तर भारत की तुलना में उतना भव्य नहीं है किन्तु यहाँ की बंजारा जनजाति अपने तरीके से होली मनाती है और इस पर्व पर सुंदर नृत्य भी करती है।

कमुनि पुन्नमी: तेलंगाना में होली को तेलुगु में कमुनि पुन्नमी/काम पूर्णिमा या जजिरी कहा जाता है।

योशांग/याओशांग: मणिपुर में होली को योशांग या याओसांग कहते हैं। यह त्योहार मणिपुरी कैलेंडर के लामदा महीने के पूर्णिमा के रात्रि से शुरू होता है और पाँच दिनों तक मनाया जाता है। पहले दिन लोग लकड़ियों से बने अस्थाई झोपड़ी को जलाकर इस त्योहार को मनाना शुरू करते हैं और दूसरे दिन मिताई लोगों द्वारा भजन-कीर्तन का आयोजन किया जाता है। इसके उपरांत छोटी-छोटी लड़कियाँ अपने रिश्तेदारों के घर जाती हैं और उनसे त्योहारी के रूप में कुछ रूपये-पैसे माँगती हैं जिसे कि नकाथेंग कहा जाता है। कुछ लड़कियाँ रस्सियों से रास्ते घेरकर लोगों से त्योहारी के रूप में नकाथेंग वसूलतीं हैं। इस त्योहार के चौथे दिन लोग एक-दूसरे को पानी और रंगों से सराबोर कर खुशी मनाते हैं। इस दिन कई तरह के खेलों का आयोजन किया जाता हैं। सभी लोग इन खेलों में बढ़चढ़कर हिस्सा लेते हैं। लोग एक-दूसरे को बधाइयाँ देते हैं। इस दिन एक परम्परागत कुश्ती का भी आयोजन किया जाता है जिसे कि स्थानीय भाषा में 'मुकना' के नाम से जाना जाता है।

फगवाह या देउल: असम में होली को 'फगवाह' या 'देउल' कहते हैं। भक्त इस अवसर को खोल (शंकरदेव द्वारा बनाया गया एक वाद्य यंत्र) बजाकर और स्थानीय रूप से बने पटाखों को फोड़ कर मनाते हैं। देउल के दूसरे दिन को भोर-देउल के नाम से जाना जाता है, जब मूर्तियों को फकु (होली के रंग) से रंगा जाता है। देउल के अंतिम दिन को सुवेरी या फकुवा कहा जाता है।

त्रिपुरा, नागालैंड, सिक्किम और मेघालय में भी इसी तरह होली की धूम रहती है।

बैठकी,खड़ी या महिला होली: उत्तराखंड और हिमाचल में होली को भिन्न प्रकार के संगीत समारोह के रूप में मनाया जाता है, जिसे बैठकी होली, खड़ी होली और महिला होली कहते हैं। यहाँ कुमाउनी होली प्रसिद्ध है।

कुमाऊँ में होली की शुरुआत दो महीने पहले हो जाती है। अबीर-गुलाल के साथ ही होली गायन की विशेष परंपरा है। यहाँ की होली पूरी तरह से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय अंदाज में गाई जाती है। होली गायन गणेश पूजन से शुरू होकर पशुपतिनाथ शिव की आराधना के साथ-साथ ब्रज के राधाकृष्ण की हँसी-ठिठोली से सराबोर होता है। अंत में आशीष वचनों के साथ होली गायन खत्म होता है।

कुमाऊँ में होली दो तरह की होती है- खड़ी होली और बैठकी होली। बैठकी होली के गायन से होली की शुरुआत होती है। बैठकी होली घरों और मंदिरों में गाई जाती है। मान्यता है कि यहाँ वसंत पंचमी से होली शुरू हो जाती है लेकिन कुमाऊँ के कुछ हिस्सों में पौष माह के पहले रविवार से होली की शुरुआत होती है। उस समय सर्दी का मौसम अपने चरम पर होता है। सर्द दुरूह रातों को काटने के लिए सुरीली महफिलें जमने लगती हैं। हारमोनियम व तबले की थाप पर राग-रागिनियों का दौर शुरू हो जाता है। बैठकी होली में महिलाओं की महफिल अलग जमती है, तो पुरुषों की अलग। महिलाओं की होली में लोकगीतों का अधिक महत्व होता है। इसमें नृत्य-संगीत के अलावा हँसी-ठिठौली अधिक होती है। पुरुषों की बैठकी होली का अपना महत्व है। इसमें फूहड़पन नहीं होता है। हारमोनियम, तबले व चिमटे के साथ पुरुष टोलियों में गाते नजर आते हैं। ठेठ शास्त्रीय परंपरा में होली गाई जाती है।

कुमाऊँ की होली में रागों का अपना महत्व है। धमार राग होली गायन की परंपरा है। पीलू, जंगलाकाफी, सहाना, विहाग, जैजवंती, जोगिया, झिझोटी, भीम पलासी, खयाज और बागेश्वरी रागों में होली गाई जाती है। दोपहर में अलग तो शाम को अलग रागों में महफिल सजती है। पौष मास के पहले रविवार से होली गायन शुरू हो जाता है और यह सिलसिला फाल्गुन पूर्णिमा तक लगातार चलता है। पौष मास से वसंत पंचमी तक होली के गीतों में आध्यात्मिकता का भाव होता है। वसंत पंचमी से शिवरात्रि तक अर्द्ध श्रृंगारिक रस का पुट आ जाता है जबकि उसके बाद होली के गीतों में पूरी तरह से श्रृंगारिकता का भाव छाया रहता है। गीतों में भक्ति, वैराग्य, विरह, प्रेम-वात्सल्य, श्रृंगार, कृष्ण-गोपियों की ठिठौली सभी प्रकार के भाव होते हैं।

खड़ी होली खड़े होकर समूह मेंबर गाई जाती है। यह ज्यादातर ग्रामीण इलाकों में गाई जाती है। सफेद रंग का कुर्ता, चूड़ीदार पजामा और टोपी होली का खास परिधान है। होली गाने के लिए एक घर से दूसरे घर में जाते हैं। गीतों के माध्यम से खुशहाली व समृद्धि की कामना की जाती है। खड़ी होली में अधिक हँसी-ठिठौली, उल्लास व आह्लादता होती है।

माना जाता है कि कुमाऊँ अंचल में बैठकी होली की परंपरा 15वीं शताब्दी से शुरू हुई। चंपावत में चंद वंश के शासनकाल से होली गायन की परंपरा शुरू हुई। काली कुमाऊँ, गुमदेश व सुई से शुरू होकर यह धीरे-धीरे सभी जगह फैल गई और पूरे कुमाऊँ पर इसका रंग चढ़ गया।

यहाँ की होली में चीरबंधन व चीरदहन का भी खासा महत्व है। आँवला एकादशी को चीरबंधन होता है। हरे पैया के पेड़ की टहनी को बीच में खड़ा किया जाता है। उसके चारों ओर रंगोली बनाई जाती है। हर घर से चीर लाया जाता है और पैया की टहनी पर चीर बाँधे जाते हैं। होली के एक दिन पहले होलिका दहन के साथ ही चीरदहन भी हो जाता है। यह प्रह्लाद का अपने पिता हिण्यकश्यप पर सांकेतिक जीत का उत्सव भी है। घरों में होल्यारों को गुजिया व आलू के गुटके परोसे जाते हैं। इस तरह देशभर में होली का पर्व बहुत ही धूमधाम से अपने-अपने अलग अंदाज में मनाए जाते हैं।

छुरी कला, कोरबा, छत्तीसगढ़

होली के रंग

जिंदगी में रंग ना हो,
जिंदगी नीरस हो जाती।
होली के प्यार भरे रंग,
हमें स्नेह, प्रेम, अपनापन, सौहार्द,
से भर देते, खुशनुमा कर देते।
जिंदगी में हंसी ना हो,
होली के रंग फीके लगते।
जैसे फूलों के रंग अनंत,
वैसे गुलाल के रंग अनंत,
मानव ही नहीं पशु पक्षी भी,
फूलों से रस लेते।
उनका सेवन करके खुश होते,
फिर मानव होली के रंग
के, महत्व को, अच्छे से, जान सकता।
उसमें रंगों के साथ भाव भी होते।

डॉ सीमा अग्रवाल

'निर्दलीय' के पाठकों के लिए होली की रंगारंग शुभकामनाएं

जे.के.स्टील फर्नीचर
भोपाल
जीवन मारण
स्वत्वाधिकारी संपर्क-9826422823

१. पेट्रोल पंप के सामने,चूना भट्टी, कोलार मुख्य मार्ग, २. सर्वधर्म कॉलोनी सी सेक्टर पुल समीप कोलार मुख्य मार्ग, ३. बरखेड़ी कलां मुख्य मार्ग, भोपाल